Date

17.2.11

ॐ

संकल्प मुर्ती

सभी पुण्य आत्माओ को नमस्कार - - -

इन "संकल्प मुर्तीयो" के बारे मे साधको के मन मे प्रश्न है, जिज्ञासा है, उसी का समाधान उन्हे प्राप्त हो इसी लीये यह कुछ शायद गुरु बडे महाराज श्री ने मुझसे लिखवाया है। आशा है। आप का इससे समाधान होगा। आप सभी को खुब खुब आशीर्वाद आपको गहन ध्यान अनुष्ठान मे उसी प्रणाली से मै अती प्रसन्न हुँ।

आपका
बाबास्वामी
17.2.11

उस पवित्र पहाडी पर बैठे बैठे ही मुझे समाधी लग गयी और उस पवीत्र सुगन्ध को मैं मेरे अंन्दर तक भी महसुस कर रहा था,
वह सुगन्ध किसकी थी उसका तो वर्णन ही नही किया जा सकता है, क्योकी वर्णन करने के लिये शब्द चाहीये मेरे पास तो उस सुगन्ध को वर्णन करने के लिये शब्द ही नही थे, वह भिनर ही भिनर उस सुगन्ध को महसुस कर रहा था, मन ही मन बडे महाराजश्री से प्रार्थना की आप की आज्ञा है, की गुरुकार्य बडा है, और जिवन छोटा है, इस लीये जिवन के बाद भी गुरुकार्य सतत चलता रहे इस लिये "स्थान" का निर्माण करो तो वह स्थान कैसे होना चाहीये क्या इस पवीत्र पहाड जैसे होना चाहीये, आप कृपया मार्गदर्शन करे। फिर देखा तो उसी समाधी के उपर "दिव्य ज्योती" फकीर से प्रगट हो गयी और बडे महाराज श्री की दिव्य वाणी की अनुभुती होने लग गयी "पहाडी प्राकृतीक है, ऐसे पहाडीयो पर बैठकर इनका निर्माण भी किया तो भी एक सामान्य मनुष्य यहाँ कभी पहुच ही नही सकता है, तुम्हारे गुरुजी का कार्य "आत्म समाधान" को समाज के प्रत्येक उस मनुष्य तक पहुचाना है, जो यह पाना चाहता है, और यह कार्य बहुत बडा है, एक जिवन उसके लिये पर्याप्त नही है, इसके लिये तुम्हे भी अपने आप को विभाजीत करना होगा अपने अंग प्रत्येग को विभाजीत करना होगा लाखो विश्वभर मे पहुच सको इस कार्य का मुख्य उद्देश "आत्म समाधान" का विकेन्द्रीकरण है, और इस विकेन्द्रीकरण की शुरवात तुम्हे अपने आप से ही करना होगी स्वंयम का ही विकेन्द्रीकरण करना होगा अपना स्वंयम का ही "समर्पण" इस गुरु कार्य के लिये करना होगा, क्योकी तुम्हारे शरीर पर ही तुम्हारा अधीकार है, और उसी अपने शरीर को विभीन्न भागो मे बांटकर विश्व के

Date

अलग² भागो मे रखना होगा। वास्तव मे एक शरीर के टुकडे तो नही किये जा सकते है, पर शरीर के भितर के अंशो का विभाजन संभव है,
तुम्हारे शरीर का निर्माण ही गुरुशक्तीयो ने अपनी इच्छा के अनुसार किया है, इस लीये तुम्हारा शरीर ही गुरुशक्तीयो का माध्यम बनेगा क्योकी शरीर की संरचना ही देने की दृष्टी से की गयी है, तुम्हारा अंग प्रत्यंग देता है, इसी के कारण ही तुम्हारा पात्र बडा हो गया है। और प्रत्येक सदगुरु ने इस शरीर मे "ऊर्जा शक्ती" इस लीये भरी है। ताकी इस शरीर के माध्यम से वह उन लोगो तक पहुंचे जिन तक वे पहुचाना चाहते है। शरीर ही दिव्य है, यह दिव्य शरीर होने के कारण ही इस पवीत्र पहाडी पर आ सका है, और तुम्हारे गुरु के कार्य के कारण ही तुम इस पहाडी से जाने वाले हो तुम पहले मनुष्य हो जो यहॉ आने के बाद पहाडी पर से उतरोगे। आज तक यहॉ जो भी आया वह वापस कभी गया ही नही है। यह सब उस "दिव्य शरीर" के कारण ही संभव हुआ है। इस लिये इस "दिव्य शरीर" को ही माध्यम बनाओ क्योकी यह वह शरीर है, जो अनेको संतो, मुनीयो, कैवल्य कुंभक योगीयो के सम्पर्क मे आया है। इतने लोगो के आर्शीवाद इस शरीर को ही प्राप्त हुये है, इतनी महान हस्तीयो का सानीध्य इस शरीर को प्राप्त हुआ है, वे इसी शरीर के माध्यम से तुम्हे जानते है, तो इसी शरीर को भवीष्य मे "माध्यम" बनाओ। यह शरीर ही तुम्हारे और गुरुशक्तीयो के बीच का पुल है। अब इसी पुल का निर्माण साधक व गुरुशक्तीयो के बीच करो। ताकी इसी शरीर के माध्यम से गुरुशक्तीया साधको तक पहुच सके, क्योकी गुरुशक्तीया इस शरीर के सम्पर्क मे है, और सामान्य मनुष्य तक पहुचाना चाहती है, और सामान्य मनुष्य गुरुशक्तीयो तक पहुचाना चाहता है, पर उसके पास पहुचने का "माध्यम" नही है, यदी

Date

तुमने इस शरीर को ही माध्यम बनाया तो गुरुशक्तीयां सामान्य मनुष्य तक और सामान्य मनुष्य गुरुशक्तीयों तक पहुंच सकता है।

अब प्रश्न है, की जिवन तो बहुत छोटा है, और गुरुकार्य तो बहुत बडा है, और शरीर तो नाशवान है, तो यह नाशवान शरीर से इतने वर्षों तक कार्य कैसे हो सकता है, इस शरीर को इतने वर्षों तक रखा जा सकता है, वह "मुर्तीयो के माध्यम" से इसी शरीर की मुर्तीयो का निर्माण करो और अपने जिवन काल मे ही अपना जिवन ही संकल्प बना कर इन मुर्तीयो मे प्रवाहीत करो क्योकी मुर्तीया छोटी होती है, उनमे प्रवाहीत करना आसान है, पहाड मे या किसी स्थान मे प्रवाहीत करना कठीण है और जब अपने "जिवंत चैतन्य" को मुर्तीयो मे प्रवाहीत करोगे तो मुर्तीया भी जिवंन्त हो जायेगी अपने चैतन्य को मुर्तीयो मे प्रवाहीत करते समय एक संकल्प करो जो "आत्म समाधान" मुझे मेरे जिवन मे मीला वही "आत्म समाधान" प्रत्येक उस मनुष्य को मीले जो इन मुर्तीयो के माध्यम से पाना चाहे, ऐसा करोगे तो वह मुर्तीया तुम्हारा माध्यम बन कर तुम्हारा बचा हुआ कार्य करेगी, ये मुर्तीया "जिवंन्त मुर्तीया" होगी यह मुर्तीया इतनी जिवंन्त होगी जितने जिवंन्त तुम स्वयम हो और जो "दिव्य शरीर" गुरुशक्तीयो ने माध्यम बनाया है, उसी शरीर को जैसा का तैसा मनुष्य समाज के विभीन्न स्थानो पर स्थापीत करो बस तुम्हारे जिवन का यही उद्देश है, बस इतना कार्य करो बाकी का गुरुकार्य वह मुर्तीया ही कर लेगी वह मुर्तीयो के माध्यम मे मनुष्य सर्वोत्तम इच्छा "आत्म साक्षात्कार" की वह भी पुर्ण होगी वह मुर्तीया "आत्मसाक्षात्कार" भी प्रदान करेगी जो आज तक गुरुशक्तीयो को संभव नही हुआ अब वह होगा"

Date

यह मुर्तीया विश्व के विभीन्न स्थानो पर स्थापीत करो ताकी "आत्मसाक्षात्कार" का आशिर्वाद प्रत्येक उस आत्मा को प्राप्त हो जो वह पाना चाहती हैं,
गुरुशक्तीयोने आपके शरीर को माध्यम इस कार्य के लिये बनाया हैं, और इसी के लिये उनकी शक्तीया आशिर्वाद के रुप मे शरीर मे से "चैतन्य के प्रवाह" मे सतत बहती ही रहती हैं, लेकीन शरीर का अपना एक धर्म हैं, एक सिमा हैं, उसके बाहर जाकर वह कार्य नही कर सकता हैं, इसी लीये इस शरीर का उपयोग अनेक चैतन्य के माध्यम बनाने के लिये करना होगा। एक पहाड को या एक बडे स्थान को शुद्ध करना कठीण होता हैं, लेकीन मुर्ती छोटी होती हैं, उसे पवीत्र करना और शुद्ध करना आसान होता हैं, वास्तव मे माध्यम बनाना याने क्या उस मुर्ती मे आये हुये दोषो को प्रथम दुर करना फिर वह स्वदान की मिट्टी से आये हो या स्वदान के स्थान से आये हो या "मुर्तीकार" या अन्य उन मनुष्यो से आये हो जिन्होने उस मुर्ती को बनाने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग दिया हैं, जब मुर्ती यह दोष निकालोगे तो दोहरा लाभ होगा एक ओर मुर्ती के दोष दुर होगे और मुर्ती शुद्ध एवं पवीत्र होगी तो दुसरी ओर उन मनुष्यो के भी दोष दुर होगे जिन्होने इस मुर्ती के निर्माण मे सहयोग दिया हैं, एक बार मुर्ती निर्मल और पवीत्र हो गयी उसके बाद उन सभी गुरुशक्तीयो को आमंत्रीत करना हैं, जिन्होने तुम्हारे शरीर को अपना माध्यम बनाया हैं, यह एक अनुष्ठान हैं सतत प्रयत्न से हो सकता हैं, रोसा होने पर सारी शक्तीयो ग्रहण कर के उन मुर्तीयो मे प्रवाहीत करने का हैं, कुछ दिन के बाद अनुभव होगा की उन मुर्तीयो मे से भी चैतन्य की धारा बह रही हैं, इस मुर्ती के अनुष्ठान से तुम्हे भी लाभ होगा की तुम्हारे कार्य का बोझ कम हो जायेगा और तुम स्वयम को हलका महसुस करने लग जाओगे,

Date

और दुसरी ओर गुरुकार्य करने के लिये एक और माध्यम निर्माण हो जायेगा। यह माध्यम वह सब कर सकता है, जो तुम स्वंयम एक माध्यम के रुप मे करते हो।
समय बीतने के साथ जैसे जैसे लोग इस माध्यम का उपयोग अपनी कुछ इच्छाओ की पुर्ती के लिये माध्यम के रुप मे करने लग जायेगे वैसे उसका कार्यक्षेत्र भी स्वंयम विकसीत होना प्रांरभ हो जायेगा इससे अनेक स्थानो पर एक साथ तुम अपने जिवन मे ही गुरुकार्य कर सकते हो, हाँ यह आवश्यक है, की ऐसी मुर्तीया बनाने के पुर्व ऐसे साधक साधना कर के तैयार करना होगे जो इन मुर्तीयो के चैतन्य को जान सके और उनसे चैतन्य ग्रहण कर सके क्योकी मुर्तीयो से जितना चैतन्य ग्रहण किया जायेगा उतना ही वह बढेगा याने प्रथम चैतन्य शक्ती का अनुभव समाज को करना होगा। जब तक अनुभुती का प्रचार प्रसार नही होता तब तक यह "मुर्ती का निर्माण" का कोई महत्व नही है, यह मुर्ती एक सामान्य मनुष्य की होगी उसका आकार व रुप सामान्य होगा और इसी लीये सामान्य से सामान्य मनुष्य भी आसानी से इससे जुड सकता है फिर चाहे वह मनुष्य की जाती, धर्म, देश, रंग, भाषा, लींग कुछ भी क्यो न हो सभी को इसके सानीध्य मे अनुभुती प्राप्त होगी ईश्वरीय अनुभुती को धर्म, जाती, भाषा, देश, रंग लिंग, उपासना पद्धती की सिमा से बाहर लाने का प्रयास होगा। परमात्मा सर्वज्ञ है, यह मुर्ती किसी देवता की नही होगी ~~यह~~ देवता इस मे देवत्व स्थापित करेगा क्योकी कोई विशिष्ठ देवता आया तो विशिष्ठ धर्म भी आया; यह उन सभी सीमाओ के बाहर केवल और केवल "ईश्वरीय अनुभुती" को प्रदान करेगी। याने ईश्वरीय अनुभुती कोई भी सामान्य मनुष्य प्राप्त कर सकता है, और उसके लिये केवल शुद्ध इच्छा की आवश्यकता होगी. बस यही प्रमाण यह मुर्ती प्रदान करेगी,

Date

सामान्य मनुष्य को भी केवल दर्शन से ही अनुभुती होगी सामान्य मनुष्य को चैतन्य, स्पंदन, चेतना शक्ती यह सब बाते नही समझ मे आती है,
सामान्य मनुष्य को अनुभुती प्रथम बार में जो होती है, वह होती है, अच्छा लगा यह अनुभुती दर्शन मात्र से ही होगी। और फीर उसे अनुभव होगा जो आत्मा का समाधान में जिवन मे खोज रहा था वह मुझे यहाँ प्राप्त हो गया है, बस यह "आत्म समाधान" ही उसकी आगे की यात्रा प्रारंभ कर देगा, और यह सब संभव है। क्योकी यही संकल्प करके यह मुर्ती का निर्माण किया जायेगा की जो अनुभुती मुझे मेरे जिवन मे हुई है, वही "आत्म समाधान" की अनुभुती उसे भी हो जो उसके दर्शन से पाना चाहता है, सामान्य से सामान्य मनुष्य तक बडी सामान्यता के साथ "अनुभुती" भी सामान्य रुप से की "अच्छा लगा" कराने के लिये यह एक प्रयास है, और यह अनुभुती एक सी सभी को होगी "आत्म समाधान" के संकल्प को लेकर इन मुर्तीयो का निर्माण किया गया हो तो भी प्रथम लोग अपने सांसारीक बातो का समाधान ही उससे पायेगे लेकीन हिरे² वे अनुभव करेगे की प्रत्येक प्रश्न का समाधान इस स्थान पर हो सकता है, "आत्म समाधान" प्राप्त करने की कुछ इच्छा आत्मा की सबसे बडी और एकमात्र कुछ इच्छा है, लेकीन शरीर से आत्मातक पहुचे बीना यह इच्छा कोई नही कर सकता है, लेकीन आयेगे "आत्मा स्वरुप" प्राप्त किये लोग भी आयेगे और वे केवल "मोक्ष" की स्थिती ही मांगेगे। क्योकी वे जानेगे की यह मुर्ती परमात्मा की नही है, पर इसमे परमात्मा विद्यमान है, क्योकी उसमे सोर सदगुरु की सामुहीक शक्तीया परमात्मा के रुप मे विद्यमान होगी,

ये मुर्तीयो के माध्यम से "इश्वरीय अनुभुती" को अगली पिढ़ियो तक भी पहुचाया जा सकता है, इन मुर्तीयो के लिये स्थान स्वंयम निर्माण होगे और तुम्हारे सामने आयेगे गुरुशक्तीया स्वंयम इच्छा व्यक्त करेगी की हम इस स्थान पर ही विहार करना चाहते है, जैसे २ आगे बढोगे वैसे २ रास्ते स्वंयम ही खुलते चले जायेगे।
तुम्हारे गुरुओ ने जो सालो तपस्या और साधना कर के इस ईश्वरीय अनुभुती को संजोकर रखा है, संभाला है, उन्हे तुम्हारे जिवन काल मे केवल संजोना नही है, उसे कई माध्यमो मे वितरीत कर के वृद्धीगत करना होगा, तुम्हारे गुरुओ अपने जिवन का समर्पण कर जो पाया वह सब तुम्हे समर्पीत कर दिया वह इसी आशा और "विश्वास" सेकी तुम उसे वृद्धीगत करोगे और परमात्मा को जो धर्म विशेष की सीमा मे बांधा है, उसे उस बंधन से मुक्त करोगे परमात्मा सभी का है, और सब परमात्मा के है, यह भाव "ईश्वरीय अनुभुती" के माध्यम से मनुष्य को होगा ये जिवन्त मुर्तीया स्वंयम बोल उठेगी यह मनुष्य के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देगी प्रत्येक समस्या का समाधान देगी अशान्त मन को "शांन्ती" देगी भयभीत मन को "विश्वास" देगी, नीराधार को "आधार" देगी, बिमार को "स्वास्थ" देगी, यह मुर्तीया तो "कल्पवृक्ष" के समान होगी उसके सानीध्य आप जो चाहो वो पाओ वाली स्थिती होगी, वह जमाने के ठुकराये मनुष्य को भी अपनायेगी इस के द्वार पर "खोटे सिक्के" भी चल पडेगे, बस दर्शन करने वाला कितने "विश्वास" से आता है, कितने विश्वास से अपनी बात कहता है, इसी पर सब निर्भर होगा, वह तो माध्यम है, परमात्मा तो उसके भितर बैठकर सब सुनते ही रहना होगा। ही उसका अनुभव भी लोगो को

Date

आयेगा। जो मनुष्य अपने अंहकार के कारण शायद तुम्हे समर्पीत न हो पाये हो वे भी इन मुर्ती के माध्यम के सामने झुकेगे, और वे जितना झुकेगे उतना ही वे खाली होगे और जितने खाली होगे उतने ही वे चैतन्य से भरे जायेगे,
इन मुर्तीयो के माध्यम से "इश्वरीय अनुभुती" उन लोगो तक भी पहुचेगी जिन लोगो तक तुम-तुम्हारे जिवन काल मे नही पहुच सकोगे, याने तुम्हारा कार्य तुम्हारे बाद भी अविरत रुप से चलता ही रहेगा और गुरुओ की कृपा मे प्राप्त शक्तीया केवल एक शरीर मे ही रखना कहा तक उचित है, इन शक्तीयो का तुम्हारे जिवन काल मे विभाजन करो भारतीय संस्कृती मे गुरु को देवतुल्य माना जाता है, उसके देहत्याग के बाद उनकी मुर्ती तो बनायी ही जाती है, लेकिन वह प्रतीक होती है, जिवन्त नही होती इस लीये गुरु शक्तीयो की इच्छा तुम तुम्हारे जिवन काल मे ही जिवंन्त मुर्तीया "संकल्प शक्ती" के साथ बनाओ जो तुम्हारे बाद भी तुम्हारा कार्य करती रहे, इससे तुम्हारी "समाधी" पर भी शक्तीयो का केन्द्रीय करण नही होगा और आत्म साक्षात्कार देने का कार्य विश्वस्तर का हो यह उन विश्वस्तर पर होना ही चाहीये वास्तव मे यह "स्थुल शरीर की सुक्ष्मशरीर मे विसर्जन" की प्रक्रिया है, लेकीन यह प्रक्रिया से अगर एक से अधीक स्थान का निर्णय हो तो वह अच्छा प्रतीत होता है, बाद मे मुर्तीयो के संकल्प से ही सुक्ष्म शरीर का विस्तार बढने लगेगा और स्थुल शरीर का भी बोझ कम होने लगेगा क्योकी यह कार्य बहुत विशाल होने वाला जिस का अंदाजा अभी कीसी को भी नही है

Date

ये मुर्तीया तो केवल खाली होने के लिये निर्माण होगी लेकीन पास की लगने से मनुष्य आसानी खाली हो जायेगा वह खाली कब हो गया उसका उसको ही पता नही चलेगा।
मुर्तीया तो केवल मनुष्य को अंहकार रहीत करने का निर्माण होगी मनुष्य जितना खाली होगा उतनी ही सामुहीकता की शकती गुरुओ के आशिर्वाद स्वरुप प्राप्त होगी और बाद मे गुरुओ के सकारात्मक सामुहीक शकती के परिणाम ही उसे संतुलीत करेंगे और संतुलीत मनुष्य के हाथ से संतुलीत कार्य होंगे और उसका जिवन एक "आत्मीक समाधान" और शांन्ती भरा जिवन होगा, क्योकी जैसे ही मनुष्य का अंहकार समाप्त होगा तो उसके ही भितर का आत्मा प्रगट होगा उस आत्मा को परमात्मा की शकती प्राप्त होगी, और उसे होने वाली चैतन्य की अनुभुती साक्षात परमात्मा का प्रमाण देगी,
कुछ मुर्तीया अच्छे उर्जा स्थानो को निर्माण करेगी यानी मुर्तीया स्थापीत होने के बाद ही अच्छे उर्जा स्थानो का निर्माण होगा और कुछ उर्जा स्थान जो पहले से पवीत्र है, शुद्ध है, वे स्थान पहले निर्माण होगे और वह स्थान मुर्तीयो को आमंत्रीत करेंगे और उन उर्जा स्थानो के कारण गुरुशकतीया वहा मुर्ती के रुप जाकर स्थायी होगी, और यह स्थान अधीक प्रगती से कार्यरत होगे एक बडी आत्माओ की सामुहीकता इन के आसपास के भुभाग पर निर्माण होगी ठीक इसी प्रकार से कुछ मुर्तीया तुम अपनी इच्छा से स्थापीत करोगे और कुछ मुर्तीया गुरुशकतीया तुम्हारे हाथो से स्थापीत करा लेगी और यह कब हो गयी तुम्हे इसका भी पता नही चलेगा, प्रत्येक मुर्ती का एक सा आभामंडल होगा एकसा विश्व होगा इन के आसपास एक शांन्त, कल्याणकारी, सकारात्मक उर्जा से भरा, चैतन्य के स्पंदनो से भरा हुआ

Date

वातावरण सदैव होगा ऐसे शांन्त विश्व मे जो भी आत्मा जाकर "आत्मानंद" का अनुभव करेगा वह वहाँ पर बार² जाना चाहेगा।
इनके आसपास सदैव एक सा शांन्त, प्रज्जवलित वातावरण होगा बाहरी जगत का प्रभाव इनके आसपास भी नही होगा इसी लीये वैचारीक प्रदुषण भरे रेगीस्थान मे यह स्थान तो एक मिठे झरने जैसा प्रतीत होगा। कई मृत आत्मारो जो "मोक्ष" की प्रतीक्षारत होगी वे इसे सर्वप्रथम पहचानेगी और वे अन्य किसी के शरीर का माध्यम बनाकर इनके दर्शन को आयेगी और ऐसी आत्मारो केवल "मोक्ष" ही मांगेगी कयोकी वे जानती है, कीस स्थान पर कया मांगना चाहिये, लेकीन उन्हे "मोक्ष" मांगता देख कर अन्य मनुष्यो को भी "मोक्ष" मांगने की इच्छा होगी और वे अपने जिवनकाल मे ही मोक्ष की स्थिती को प्राप्त करेगे। कुछ समय के बाद प्रत्येक मनुष्य को व्यक्तीगत मार्गदर्शन करना संभव न हो सकेगा लेकीन ऐसे समय यह मुर्तीया वह व्यक्तीगत मार्गदर्शन का भी कार्य करेगी, लेकीन वह उस दर्शन को आने वाले मनुष्य के "भाव" के उपर ही निर्भर होगा, वे मुर्ती बाते भी कर सकेगी वह दिशा भी दे सकेगी, इन मुर्तीयो के चैतन्य से आसपास का वातावरण भी प्रभावीत होगा और आसपास के वातावरण से प्रभावीत होकर दूर दूरसे पशु और पक्षी भी उस स्थान पर जमा होगे, कयोकी उस वातावरण मे सभी जिवो को आत्मशांन्ती अनुभव होगी कयोकी उनके आसपास एक कल्याणकारी विश्व का निर्माण होगा और भविष्य मे इन मुर्तीयो के माध्यम से विश्वस्तर पर शांन्ती और सकारात्मक भाव का निर्माण होगा और यह विश्वशांन्ती के लीये तुम्हारा और तुम्हारे गुरुओ का बहुमुल्य योगदान होगा,